आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Rayat Shikshan Sanstha's

Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur (Perid)

One Day National Interdisciplinary Conference
On

Recent Trends and Issues in Languages, Social Sciences and Commerce

Saturday, 4th January, 2020

Organized by

Department of English, Hindi, Marathi, Economics, History, Commerce and IQAC

21 वी सदी की हिन्दी गजलों में सामाजिक विमर्श

डॉ. महादेवी गुरव

प्रस्तावना :–

गजल साहित्य पूर्व में 'अरबी' साहित्य की एक प्रसिध्द काव्य विधा का नाम है जो, बाद में "फारसी" उर्दू, "नेपाली" और 'हिन्दी भाषा में' लोकप्रिय के शिखर पर पहूँचा एक श्रेष्ठ काव्य कृति को गजल नाम परिचित हो गयी । संगीत क्षेत्र में इस को गाने के लिए 'इरानी और भारतीय संगीत' के मिश्रण से अलग शैली का शुभारंभ हुआ । 'गजल' – का शब्दार्थ 'अरबी' भाषा के इस का अर्थ है औरतो से या औरतों के बारे में बातें करना ।

स्वरुप –

"गजल" एक प्रभावी "काव्य कृति" है जो एक ही बहर और वजन के अनुसार लिखे गए शेरों के समूह को गजल कहते है । गजल के अंतिम शेर को 'मक्ता' कहते है मक्ते में सामान्यतः शायर अपना नाम रखता है जैसे उर्दू– शायर "शकील बदायूनी" की एक पंक्ति – लेगा न शकील आपसे इजहारे – तममा मुश्किल है वहीं काम जो आसान बहुत है"। 'शकील' उनकी करम फरमाइयों से दिल धडकता है ये माना खूबसूरत है, मगर नादान तो होंगे। इसतरह गजलों में शेरों की विषय संख्या होती है जैसे–तीन, पांच, सात एक गजल में (5) पांच से लेकर 25 तक शेर हो सकते है ये शेर एक दूसरे से स्वतंत्र होते है । कभी कभी अनेक शेर मिलकर अर्थ का खुलासा होता है ऐसे शेर को "कता" बंद कहलाते है । गजल के शेर तुकांत शब्दोंको "काफिया" कहा जाता है । शेरो में दोहरानेवाले शब्दोंको "रदिफ" कहा जाता है । शेर की पंक्तिको मिश्रा कहा जाता है । गजल के सबसे अच्छे शेर को "शाहेबैत" कहा जाता है । गजलोंके ऐसे संग्रह को "दिवान" कहते है। प्रमुखता से गजलोंके दो प्रकार होते है । 1) मुवदस गजले 2) कुकफ्का गजले ।

ऐतिहासिक दृष्टीसे गजल :–

इतिहासकी दृष्टी से गजलोंका आरंभ "अरबी साहित्य" की काव्यधारा के रुप में हुआ अरबी भाषा में कही गयी गजलें वास्तव में औरतोंसे बाते या उसके बारे में बाते करना होती है । इसके बाद "फारसी साहित्य" में आकर यह विधा शिल्प के स्तर पर रही किंतू तत्थ की दृष्टी से उनसे आगे निकल गई उनमें बाततो दैहिक या भैतिक प्रेम की की गई किंतू उसके अर्थ विस्तारव्दारा दैहिक प्रेम का अध्यात्मिक प्रेम में बदल दिया गया । "इश्के मजाजी" फारसी में "इश्के हकीकी" हो गया फारसी गजल में प्रेम को सादिक, साधक और प्रेमिका को माबुद (ब्रम्ह का) दर्जा मिल गया इस तरह गजल का स्वरुप परिवर्तीत होने में सुफिसादकों की निर्णायक भूमिका रही सुफी साधना संयोग वियोग दोनो पक्षों में ही प्रधानता रही बाद में फारसी से उर्दु में गजल का स्वरुप ज्योंका त्यों स्वीकार किया गया कथ्य केवल भारतीय हो गया । इस तरह हिन्दुस्तानी गजलों का जन्म "बहमनी सल्तनत" के समय दक्कन में हुआ वहाँ गितो से प्रभावीत गजले लिखी गयी । तब वली दकनी शिराज दाÅद आदी इसी प्रकारे के शायर थे इन्होंने "अमिर खुसरो" 1310 की परंपरा को आगे बढाया । उस समय उŸार भारत में राजकाज की भाषा फारसी थी । जब उŸार भारत में गजय आयी तब उसपर फारसी भाषा का प्रभाव पडा जैसे – गालिब और इसबाल की आरंभीक गजले इसी प्रकार की है।

हिन्दी में "गजलोंको" अनेक रचनाकारोंने इसे अपनाया जिनमें निराला शमशेद बलवीर सिंग रंग भवानी शंकर जानकी वल्लभ शास्त्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदी इनमें दुषंत कुमारजी की गजल पीर पर्वतसी हो गयी नामक गजल में उन्होंने सामाजिक विसगतीयों का चित्रण किया गया है। जैसे –

मेरे सीनें में नही तो
तेरे सीने पर सही